

श्री निर्वाणक्षेत्र पूजन

(पं. दानतरायजी कृत)

(सोरठा)

परम पूज्य चौबीस, जिहँ जिहँ थानक शिव गये।

सिद्धभूमि निश-दीस, मन-वच-तन पूजा करौं॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र अवतरत अवतरत संवौष्ट।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र मम सन्निहितानि भवत् भवत् वषट्।

(गीता)

शुचि क्षीर-दधि-समनीर निरमल, कनक-झारी में भरौं।

संसार पार उतार स्वामी, जोर कर विनती करौं॥

सम्मदेगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलासकों।

पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवासकों॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर सुगन्ध चन्दन, सलिल शीतल विस्तरौं।

भव-ताप कौ सन्ताप मेटो, जोर कर विनती करौं॥

सम्मदेगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलासकों।

पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवासकों॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती-समान अखण्ड तन्दुल, अमल आनन्द धरि तरौं।

औगुन-हरौ गुन करौ हमको, जोर कर विनती करौं॥सम्मदे॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ फूल-रास सुवास-वासित, खेद सब मन के हरौं।

दुःख-धाम काम विनाश मेरो, जोर कर विनती करौं॥सम्मदे॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज अनेक प्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरौं।

यह भूख-दूखन टार प्रभुजी, जोर कर विनती करौं॥सम्मदे॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक-प्रकाश उजास उज्ज्वल, तिमिरसेती नहीं डरौं।

संशय-विमोह-विभ्रम-तम-हर, जोर कर विनती करौं॥सम्मेद॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ-धूप परम-अनूप पावन, भाव पावन आचरौं।

सब करम पुज्ज जलाय दीज्यो, जोर-कर विनती करौं॥सम्मेद॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु फल मँगाय चढ़ाय उत्तम, चार गतिसों निरवरौं।

निहचै मुकति-फल-देहु मोको, जोर कर विनती करौं॥सम्मेद॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गन्ध अच्छत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं।

‘द्यानत’ करो निरभय जगतसों, जोर कर विनती करौं॥सम्मेद॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(सोरठा)

श्रीचौबीस जिनेश, गिरि कैलाशादिक नमों।

तीरथ महाप्रदेश, महापुरुष निरवाणतैं॥

(चौपाई १६ मात्रा)

नमों ऋषभ कैलासपहारं, नेमिनाथ गिरनार निहारं।

वासुपूज्य चम्पापुर वन्दौं, सन्मति पावापुर अभिनन्दौं॥

वन्दौं अजित अजित-पद-दाता, वन्दौं सम्भव भव-दुःख घाता।

वन्दौं अभिनन्दन गण-नायक, वन्दौं सुमति सुमति के दायक॥

वन्दौं पद्म मुकति-पद्माकर, वन्दौं सुपास आश-पासहर।

वन्दौं चन्द्रप्रभ प्रभु चन्दा, वन्दौं सुविधि सुविधि-निधि-कन्दा॥

वन्दौं शीतल अघ-तप-शीतल, वन्दौं श्रेयांस श्रेयांस महीतल।

वन्दौं विमल-विमल उपयोगी, वन्दौं अनन्त-अनन्त सुखभोगी॥

वन्दौं धर्म-धर्म विस्तारा, वन्दौं शान्ति, शान्ति मनधारा ।
 वन्दौं कुन्थु, कुन्थु रखवालं, वन्दौं अर अरि हर गुणमालं ॥
 वन्दौं मल्लि काम मल चूरन, वन्दौं मुनिसुव्रत व्रत पूरन ।
 वन्दौं नमि जिन नमित सुरासुर, वन्दौं पार्श्व-पास भ्रम जगहर ॥
 बीसों सिद्धभूमि जा ऊपर, शिखर सम्मेद महागिरि भू पर ।
 एक बार वन्दै जो कोई, ताहि नरक पशुगति नहिं होई ॥
 नरपति नृप सुर शक्र कहावै, तिहुँ जग भोग भोगि शिव पावै ।
 विघन विनाशन मंगलकारी, गुण-विलास वन्दौं भवतारी ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा ।

(घत्ता)

जो तीरथ जावै, पाप मिटावै, ध्यावै गावै, भगति करै ।
 ताको जस कहिये, संपति लहिये, गिरि के गुण को बुध उचरै ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

हे जिन तेरो सुजस उजागर, गावत हैं मुनिजन ज्ञानी ॥टेक॥
 दुर्जय मोह महाभट जाने, निज वश कीने हैं जग प्रानी ।
 सो तुम ध्यान कृपान पान गहिं, तत् छिन ताकी थिति हानी ॥१॥
 सुप्त अनादि अविद्या निद्रा, जिन जन निज सुधि बिसरानी ।
 हवै सचेत तिन निज निधि पाई, श्रवण सुनी जब तुम वानी ॥२॥
 मंगलमय तू जग में उत्तम, तू ही शरण शिवमग दानी ।
 तुम पद सेवा परम औषधि, जन्म-जरा-मृत गद हानी ॥३॥
 तुमरे पंचकल्याणक माहीं, त्रिभुवन मोह दशा हानी ।
 विष्णु विदाम्बर जिष्णु दिगम्बर, बुध शिव कहि ध्यावत ध्यानी ॥४॥
 सर्व दर्व गुण परिजय परिणति, तुम सुबोध में नहिं छानी ।
 तातें 'दौल' दास उर आशा, प्रकट करी निज रस सानी ॥५॥